Topic-4 2 **यण् संधि**

अनचि च ।

अचः परस्य यरो द्वे वा स्तो न त्वचि ।
यदि स्वर-वर्ण परे न हो, तो स्वर-वर्ण के पश्चात् हकार को छोड़कर अन्य व्यंजन का द्वित्व हो जाता है। यह द्वित्व विकल्प से ही होता है।

सूत्रस्थ अनचि प्रसज्य प्रतिषेध है। अर्थात् ~~साथ का आ~~ अच् परे नहीं होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि अन्य भिन्न वर्ण परे हो ही। व्यंजन वर्ण न परे होने पर भी द्वित्व होता है, यथा - 'वाक्' से 'वाक्क'।

मलां जश् झाशि ।

संयोगान्तस्य लोपः ।
संयोगान्तं यत्पदं तस्य लोपः स्यात् ।

अलोऽन्त्यस्य ।
षष्ठी-निर्दिष्टस्यान्त्यस्याल आदेशः स्यात् ।
(वा०) यणः प्रतिषेधो वाच्यः ।

सुद्ध्युपास्यः

① सुधी + उपास्य	मूल स्थिति
II सुध्य् + उपास्य	यणादेश
III सुध्ध्य् + उपास्य	'अनचि च' से द्वित्व
(IV) सुद्ध्य् + उपास्य	जश्त्व

सुद्ध्युपास्यः
मद्ध्वरिः